वृत्तपत्राचे नांव :- हिन्दी मिलाप
वृत्तपत्र प्रकाशन ठिकाण :- हैदराबाद
पृत्तपत्र पान नं.:- 7
दिनांक :- 15-02-2008

श्रुति, स्मृति और पुराण की त्रयी में आत्म का स्वरूप

आत्मा का गठन स्मृति से हुआ है। उसकी सत्ता केवल स्मृति के स्तर पर है। इसका बोध स्मृति के स्तर पर हो सकता है। 'अ' में दो विरोधी तत्व एक साथ समाहित हैं। 'अ' की अनन्तता और 'म' की बिन्दुरूपता। यह जो आत्म के 'अ' की अनन्तता है, उसमें बिन्दुरूपता की स्मृति है और यह जो 'म' की बिन्दुरूपता है, उसमें 'अ' की अनन्तता की स्मृति है। आत्मा में 'अ' और 'म' दोनों हैं, अतएव आत्मा दोनों स्मृतियों की एकीकृत अवस्था है, संहिता है और यह स्मृति ही स्वयं में आत्मा की क्रियाशक्ति है। 'स्वयं में' का अर्थ है कि स्मृति के स्तर पर 'अ' में 'म' और 'म' में 'अ' समाया है। 'अ' की अनन्तता का बिन्दुरूप 'म' की स्मृति है और 'म' की बिन्दुरूपता में अनन्तरूप 'अ' की स्मृति है। इस प्रकार स्मृति के स्तर पर अनन्तता से बिन्दुरूपता का एक मार्ग और बिन्दुरूपता से अनन्तता का दूसरा मार्ग। स्पष्ट है कि यह दोनों स्मृतियां क्रियाशक्ति के चलते हैं। दो विरोधी दिशाओं में प्रवाहमान क्रियाशक्ति। एक अनन्तता से बिन्दुरूपता की ओर और दूसरी बिन्दुरूपता से अनन्तता की ओर।

जैसा कि हम जानते हैं कि स्मृति मन के स्तर की वास्तविकता है। यह इन्द्रियों के स्तर की बात नहीं है, क्योंकि इसमें एक दिशा की क्रियाशक्ति दूसरी दिशा की क्रियाशक्ति से अनावेषित हो जाती है। यहाँ क्रिया तो है, लेकिन वह दोतरफा है। दोतरफा क्रिया का एक सन्धि-बिन्दु है, जिसे वैदिकी की भाषा में, न्यायशास्त्र की भाषा में 'देहरी दीपक' कहते हैं। देहरी दीपक अर्थात जिसमें दरवाजे

– महर्षि महेश योगी

के अन्दर और बाहर दोनों जगह प्रकाश होता है, लेकिन संधि बिन्दु पर देहरी पर जो प्रकाश होता है, वह शुद्ध होता है, पूर्ण होता है। यह अदिक् स्थल है, देश है। यहाँ के प्रकाश की दो दिशाएं हैं- बाहर की ओर और भीतर की ओर। इस तरह तीन बातें सामने आती हैं। एक बाहर की दिशा, दूसरी भीतर की दिशा और तीसरी अदिकता। इस तरह स्मृति की सत्ता में तीन बातें समाविष्ट हैं।

जहाँ ध्वनि है, वहाँ श्रुति है। दूसरे शब्दों में श्रुति का आधार स्मृति है और स्मृति का पुराण और पुराण का आत्मा।

हम ऐसा भी कहें तो गलत नहीं होगा कि आत्मा का गठन जिस स्मृति से है, यह स्मृति स्वयं में जागी रहती है और इसका यह स्वयं में जागना अव्यक्त का क्षेत्र है। आत्मा अव्यक्त का क्षेत्र है। आत्मा के गठन में एक, अनन्तता में कण की 'अ' में 'म' की अग्रगामी स्मृति और दूसरी, बिन्दु में अनन्तता की पश्चगामी स्मृति शामिल है। इन दो परस्पर विरोधी स्मृतियों के घर्षण में किंचित ध्वनि उत्पन्न होती है, लेकिन वह अश्रुत्य रहती है, सुनाई नहीं पड़ती। यह अश्रुत्य, अव्यक्त ध्वनि ही वेद की ध्वनि है। वेद इस अनन्तता रूप 'अ' की स्मृति के प्रवाह की, स्वर की ही अभिव्यंजना है। कहने का आशय है कि स्मृति से श्रुति का अभ्युदय होता है, उस श्रुति का अभ्युदय होता है, जो सुनाई पड़ती है। यहाँ श्रुत्य का अर्थ है, जो ऐन्द्रिक स्तर पर सुनाई पड़े। यह विस्तार का स्तर है।

प्रश्न उठता है कि यह विस्तार कहाँ से होता है? यह अव्यक्त से होता है। जिस जगह अव्यक्त और व्यक्त दोनों एक साथ विद्यमान होते हैं, दो विलोम एक साथ स्थित होते हैं, वहीं ब्रह्म की सत्ता है। और यह ब्रह्म अनादि है, प्राचीन है, पुराना है, पुराण है। अनिवर्चनीय ब्रह्म के बारे में जो कुछ भी है, वह वेद रूप पुराण ही है। वेद का पुराण रूप ब्रह्म शान्त-प्रशान्त चेतना का सागर है, 'पुरुषा' है, जो स्वसंवेद्य है, अपने में अपनी स्मृति समेटे हुए है। इस स्मृति की अपने से पृथक कोई अन्य सत्ता नहीं है। यह स्वसंवेद्य है और ऐसे ही पुराण की भाषा है, जो ब्रह्म का गान करती है। इसे ऐसे भी कह सकते हैं। स्मृति प्रशान्त सागर में लहर की तरह है। इस लहर से ध्वनि उत्पन्न होती है। जहाँ ध्वनि है, वहाँ श्रुति है। दूसरे शब्दों में श्रुति का आधार स्मृति है और स्मृति का पुराण और पुराण का आत्मा। आत्मा, दो विरोधी गुणों की संहिता, शान्त चेतना का अपार महासागर, इस विश्व ब्रह्मांड का नियन्ता है, 'पुरुष' है, पुरुषोत्तम है।